Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal
ISSN No : 2230-7850 Impact Factor : 4.1625 (UIF) [Yr. 2016]

ISRJ Indian Streams Research Journal

ऊषा भसीन के नाटक 'तिनका-तिनका सुख' में नारी-चेतना

बलजिंदर कौर[1] , डॉक्टर विनोद कुमार[2]
[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, लवली प्रॉफ़ैशनल यूनिवर्सिटी फगवाड़ा (पंजाब)
[2] लवली प्रॉफ़ैशनल यूनिवर्सिटी फगवाड़ा (पंजाब)

प्रस्तावना :—

नारी और पुरुष एक सिक्के के दो पहलू हैं। वह एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।जैसे सिक्के के एक पहलू को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही स्त्री और पुरुष का रिश्ता अटूट हैं। सदियोंसे स्त्री पुरुष की अर्द्धांगिनी रही है। इसके उदाहरण हमारे साहित्यक ग्रन्थों में मिलते हैं। नारी पुरुष का साथ माँ,पत्नी,बहन के रूप में निभाती आ रही है। नारी शक्ति का प्रतीक है । नारी की शक्ति

असीम है, वह समय आने पर दुर्गा का भी रूप धारण कर सकती है। दिविक रमेश के अनुसार, "जैसे जीवन में नारी का महत्व हमेशा था, है और रहेगा, उसी प्रकार साहित्य में भी नारी के बिना न काम चला था, चला है, और न चलेगा। पुरूष की उपस्थिति जितनी अनिवार्य है, उतनी ही नारी की भी। यह बात अलग है, कि समय-समय पर पुरूष और नारी के सम्बन्धों की संतुलित समझ गडबड़ाती रही हैं। पुरूष वर्चस्व न आसमान से टपका है, और न ही जन्मजात है। जैसे स्त्री पैदा नहीं होती बनायी जाती है। उसी प्रकार पुरूष भी पैदा नहीं होता बनाया जाता है। विडम्बना यह है, कि इस बनाने में जाने-अनजाने पुरुष और नारी दोनों का हाथ होता हैं- कमोबेश माना गया है, कि नारीवाद की प्रेरणा वर्जिनिया वुल्फ थी, जिनका लेखन काल 1915 से 1940 है। यह समय भारतीय नवजागरण का भी है, और भारतीय नारी जागरण का भी।"[1]

प्राकृतिक रूप में जब लड़का और लड़की जन्म लेते हैं,तो वह समान होते हैं, लेकिन बाद मेंहमारा समाज ही उनमें भेद-भाव करता है। पराया धन का तमगा बचपन से ही लड़की पर लगा दिया जाता है।'तिनका-तिनका सुख' नाटक में,"चम्पा की माँ लड़के-लड़की में भेद-भाव करती है। वह चम्पा को कहती है, कि तुम भाई का काम करो, वह लड़के को दूध, घी ज्यादा खाने को देती है, और कहती है, तुम लड़की हो वह लड़का। चम्पा की माँ चाहती है, कि चम्पा स्कूल न जाए, बल्कि घर रहकर काम करे।"[2]नारी-चेतना जानने से पहले नारी और चेतना शब्द का अर्थ जान लेना बहुत जरूरी हैं।चेतना वह होती है, जो व्यक्ति को अपने-आप के बारे में तथा अपने वातावरण से अवगत कराती है।चेतना का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व होता है। जब मनुष्य में चेतना जागृत होती है, तभी उसमें कुछ करने की इच्छा उत्पन्न होती है।प्रवीण बाला के अनुसार, "नारी शब्द नर, के समानान्तर है। इसका प्रयोग स्त्रीलिंगवाचक 'मादा' प्राणियों के प्रतीक के रूप में होता

है।कोमलता,दृढ़ता स्पर्धा आदि गुण नर की अपेक्षा नारी में सर्वाधिक होते हैं।"[3]एक नारी माँ के रूप में पुरुष से अधिक करुणामयी होती है। वह अपनी इच्छाओं का त्याग करके पुरुष के प्रति समर्पित होती है।

डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "जहां कही अपने आपको उत्सर्ग करने की अपने आपको खपा देने की भावना प्रधान है, वही नारी है।"[4]हमारा समाज आवशयउन्नति कर रहा है, पर इन सबके के बाद भी हमारे समाज में खामियाँ हैं, औरत के साथ जुल्म की कथाएं लगातार बढ़ती ही जा रही हैं। मर्द की मंद बुद्धि करके औरत पर मर्द की कामुक भावना बहुत भारी हो जाती है।नारीवादी आन्दोलनों के द्वारा आज की नारियों में काफी चेतना जागृत हुई है। आज के समाज में नारी को स्वतंत्रता प्रदान की गई है। प्राचीन समय में नारी को गुलाम बनाकर रखा जाता था, लेकिन आज थोड़ा हमारे समाज में बदलाव आया है। आज की नारी सोचती है, कि वह पुरुष के समान है, अपनी सुरक्षा वह खुद कर सकती है। आज की नारी को स्वतंत्रता तो मिली है, लेकिन वह कहीं न कहीं पर इस स्वतंत्रता का गलत प्रयोग कर रही है।

नारी की कोमल भावनाओं का लाभ उठा कर, और उसकी कल्पनाओं को सहला कर पुरुष वर्ग ने उसे एक प्रकार से गुलामी का जीवन जीने के लिए बाध्य किया है, जो निश्चित ही भारत जैसे देश में एक कलंक है, क्योंकि इस देश का नारा शुरू से ही रहा है, जोशी जी के अनुसार,

"यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तंत्र देवता।"[5]

कई बार यह सोच बहुत ज्यादा दु:ख होता है, कि अनेकों प्रयत्नों के बाद भी देश में औरत सुरक्षित नहीं है।औरत के साथ कई तरह के जुल्म शताब्दियों से होते आ रहे हैं। कई बार औरत जन्म से लेकर मृत्यु तक घुटन का जीवन व्यतीत करती है।'तिनका-तिनका सुख' नाटक में,"पूनम को उसके ससुराल वाले दहेज लाने के लिए कहते थे। उसको मारते-पीटते थे। समाज और परम्पराओं के बंधन में बंधी पूनम को रोज़-रोज़ की टर-टर को समाप्त करने के लिए आत्महत्या कर ली।"[6] इस प्रकार आज भी लड़कियां दहेज की खातिर जलाई जाती हैं। आज भी उस पर अनेक तरह के दबाव रहते हैं। देश की आज़ादी से लेकर औरत की आज़ादी का सपना लिया गया था। अनेक क्षेत्रों में औरत आज मर्द से आगे हैं। प्रधान मंत्री की कुर्सी पर भी औरत विराजमान रही है, पर इस के बावजूद समाज में अब भी औरत वर्ग का बहुत बड़ा हिस्सा मर्द की गुलामी नीच दबा नर्क भरी ज़िंदगी व्यतीत कर रहा है। अब भी उसे भोग विलास की वस्तु समझा जा रहा है।

श्रीराम शर्मा आचार्य लिखते हैं, "इक्कीसवीं सदी महापरिवर्तनों की वेला है।इन दिनों हम सब सक्रमणकाल से गुजर रहे हैं, जिसमें सारी धरित्री का भाग्य नये सिरे से लिखा जा रहा है। महाकाल का लक्ष्य है – सतयुग की वापसी। इस सतयुग में नारी का खोया वर्चस्व उसे नये सिरे से प्राप्त होगा, वह स्वयं उठेगी –आवांछनीयता के बंधनो से मुक्त होगी, जिसमें उसके अपने समुदाय जन-समाज एंव समस्त संसार को न्याय मिलने की सम्भावना बनेगी।अंधकार युग से ऊब कर अनेक सत्प्रवृतियों की तरह नारी भी अब नये सिरे से अपने वर्चस्व का परिचय देने के लिए ऊपर आ रही है। विदेश में आरम्भ हुआ यह क्रम अब विगत एक शताब्दी में भारत की देहरी तक आ पहुंचा है।"[7]

इक्कीसवीं सदी में बहुत सारे परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। नारी विमर्श सबसे पहले विदेश में शुरू हुआ था, लेकिन अब यह भारत के दरवाजे तक भी आ पहुंचा है। अब नारी अपना खोया हुआ सम्मान दुबारा प्राप्त करेंगी, और सभी प्रकार की रूढ़ियों से मुक्त होगी। 'तिनका – तिनका सुख' नाटक में,"सुषमा जब अपने ससुराल से लड़-झगड़कर आ जाती है, तो वह शिक्षित होने के कारण अपना कार्य शुरू कर लेती है, सुषमा हिम्मत नहीं हारती, और अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है।"[8] अगर आज की नारी शिक्षित है, तो वह कोई भी कार्य कर सकती है। वह किसी पर बोझ नहीं बनना चाहती, चाहे आज भी कानून के द्वारा नारी की सुरक्षा के लिए बहुत सारे अधिकार दिए गए है, लेकिन आज भी उसके साथ बहुत गलत हो रहा है।

वास्तव में नारी-सशक्तिकरण नारी की अपनी अस्मिता के बोध से सम्बन्धित है, और वह अगर उस संघर्ष के लिए तैयार नहीं है, तो न उसे कोई सरकारी योजना लाभ पहुंचा सकती है, और न कोई नारीवादी आंदोलन। जब तक नारी को अपने अस्तित्व का बोध नहीं होता, तब तक वह अपने साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष नहीं कर सकती।

'तिनका-तिनका सुख' नाटक में,"रुसखाना पढ़ी-लिखी नहीं थी, वह सोचती है, कि अगर वह पढ़ी होती तो अपने बच्चों को सारी सुख-सुविधाएं दे सकती थी, पर अब पछताएँ क्या होता है।"[9]इस प्रकार एक नारी को अपने पैरों पर खड़े होने के लिए पढ़ना-लिखना बहुत जरूरी है।

ज्ञानचन्द गुप्त आज की नारी के विषय में लिखते हैं,"आज नारी को परम्पराओं के सारहीन संदर्भ मान्य नहीं। वह जीवन के विविध क्षेत्रों में अपनी निजता का एहसास जगा रही है। वह जीवन के हर क्षेत्र में जूझकर समाज की पुरानी परम्पराएँ एवं आदर्श बदलने के लिए संघर्षरत है।"[10]इसका मतलब यह है, कि आज की नारी पुरानी रूढ़ियों को नहीं मानती। आज वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अधिकार

कायम कर रही है।आज औरत को आर्थिक स्वतंत्रता तो है, लेकिन वह पूरी तरह स्वतंत्र नहीं। आज औरत दोहरा अभिशाप भोग रही है। जो औरत नौकरी करती है, वह घर का सारा कार्य करके जाती है, और उसका पति चाहता है, कि उसकी सैलरी वह सबसे पहले अपने पति के हाथ में दे।

दिविक रमेश के अनुसार, "नारी विमर्श और देह विमर्श का फिलहाल चोली दामन का साथ है। देह से परे हो जाना कया है? मान लो एक स्त्री का बलात्कार होता है, स्पष्ट है कि पुरुष दोषी है, लेकिन एक सोच के अनुसार दाग स्त्री की देह को लगता रहा है।सीता ने अपनी पवित्रता का प्रमाण अग्नि परीक्षा से ही दिया|"[12] एक पुरुष को नारी की शुद्धता चाहिए। आज भी अगर स्त्री के साथ कुछ गलत होता है, तो कलंक स्त्री के माथे पर ही लगता है।

'खण्ड-खण्ड अग्नि'नाटक में,"सीता को अनेक कठिनाईयोंका सामना करना पड़ा पर वह विचलित नहीं हुई।"[11] आज की नारी अपने विरुद्ध हो रहे अन्याय का डटकर मुकाबला करती है।आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई है। आज की नारी कहती है कि वह कोई अग्नि परीक्षा नहीं देंगी, बल्कि संघर्ष करेगी। आज की औरत यह कहती है कि औरत ही अग्नि परीक्षा क्यों दें, मर्द क्यों नहीं। कयोंकि आज हर व्यक्ति अग्नि सम्पन्न है, चाहे वो राम हो या सीता।

आधुनिक बोध से प्रेरित आज युवा नारी पारम्परिक पतिव्रता पत्नी बोझ से भी मुक्त होना चाहती है। आज की पढ़ी-लिखी नारी बिना सोचे समझे किसी भी रूढ़ि को स्वीकार नहीं करती, परन्तु गौर करने पर पता चलता है कि नारी ने आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करते-करते कितने तनावों तथा संघर्षो को अनायास ही अपनी जिन्दगी में शामिल कर लिया है।पुरुष की सामंतवादी सोच में कोई परिवर्तन नहीं आया, और औरत स्वतंत्र होकर भी उसके अधीन है। आज भी पुरुष औरत को लेकर अहं भावना विद्यामान है।

शरद सिंह के अनुसार,"औरत बरसात के पानी जैसी है, उसे न जमीन चुनने का अधिकार होता है, न अपनी प्यास बुझाने का, औरत बस पान की तरह है, जिसे जब चाहा मुँह में डालकर चबाया, स्वाद लिया, और जब चाहा थूक दिया। स्त्री की दशा बाड़े में बांधकर रखी जाने वाली गाय के समान है। जिसे यदि किसी दिन घूमने भी जाने दिया जाए,तो व्यक्ति सहजता से उसके गले में अपनी रस्सी डालकर घर ले जा सकता है। वह अपनी अनिष्छा के मामूली प्रदर्शन के बाद रस्सी की दिशा में खिंचती चली जाती है, क्योंकि उसे रस्सी का सबल एवं प्रबल प्रतिरोध सीखने का कभी अवसर नहीं दिया गया।"[12]

निष्कर्ष:

यही कहा जा सकता है, कि आज के दौर में नारी-विमर्श पर और भी गहन विचार करने की आवश्यकता है, क्योंकि आज नारी को बहुत से अधिकार मिलने के पश्चात भी वह पूरी तरह स्वतंत्रत नहीं है। आज की नारी का विरोध पुरुष से नहीं, बल्कि इस की बर्चस्ववादी नीतियों से हैं, उसकी सामंतवादी सोच से है। पुरुष की इस सोच में बदलाव लाने के लिए यहाँ कानून में सुधार तथा कुछ अन्य उपाय करने होंगे, वहीं साहित्य इस दृष्टि से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अवशय निभा सकता है।

संदर्भ

1. दिविक रमेश,'स्त्री विमर्श: प्रतिशोध नहीं प्रतिरोध है',पृ॰सं॰ 1
2. उषा भसीन,'तिनका-तिनका सुख' नाटक, नई दिल्ली, पापुलेशन कम्युनिकेशनजज़ इंटरनेशनलन्यूयार्क, पृ॰सं॰ 6
3. डॉ. हुकुमचंद राजपाल,'शब्द सरोकार', प्रवीण बाला,'कथा कहो उर्वशी में नारी-संवेदना', अंक 27, वर्ष 7 अप्रैल-जून 2010, पृ॰सं॰ 55
4. डॉ. हुकुमचंद राजपाल, 'शब्द सरोकार', सोनिया रानी,'नारी चेतना का भारतीय संदर्भ: विभिन्न पड़ाव',अंक 27, वर्ष 7 अप्रैल-जून 2010, पृ॰सं॰ 40
5. डॉ. हुकुमचंद राजपाल, 'शब्द सरोकार', मीना सिन्हा,'इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में नारी-चरित्र', अंक 14,वर्ष 4, जनवरी-मार्च 2007, पृ॰सं॰ 28
6. उषा भसीन, 'तिनका-तिनका सुख' नाटक, नई दिल्ली, पापुलेशन कम्युनिकेशनजज़ इंटरनेशनल न्यूयार्क, पृ॰सं॰ 48
7. श्रीराम शर्मा आचार्य, 'इक्कीसवीं सदी नारी सदी', प्रकाशक खण्ड ज्योति संस्थान प्रकाशित जनवरी 1, 1998
8. उषा भसीन, 'तिनका-तिनका सुख' नाटक, नई दिल्ली, पापुलेशन कम्युनिकेशनजज़ इंटरनेशनल न्यूयार्क, पृ॰सं॰ 27
9. उषा भसीन, 'तिनका-तिनका सुख' नाटक, नई दिल्ली, पापुलेशन कम्युनिकेशनजज़ इंटरनेशनल न्यूयार्क, पृ॰सं॰ 27
10. डॉ. हुकुमचंद राजपाल,'शब्द सरोकार', हरविंदर कौर,'चित्रा मुद्गल की कहानियाँ: नारी-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में', अंक 38, वर्ष 10 जनवरी-मार्च 2013, पृ॰ स॰ 22

11. दिविक रमेश,'स्त्री विमर्श: प्रतिशोध नहीं प्रतिरोहै',divikramesh.blogspot.com/2011
12. शरद सिंह,'पिछले पन्ने की औरते' (उपन्यास), प्रकाशक सामयिक प्रकाशन, प्रकाशित जनवरी 1, 2005

बलजिंदर कौर
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, लवली प्रॉफ़ैशनल यूनिवर्सिटी फगवाड़ा (पंजाब)